Class - B.Com II
Subject - MF
Paper - IV (S)
Topic - Deflation
Lecture - 20
By Dr C.P.Sahu
Marwari College, Darbhanga.

मुद्रा - विस्फीति - या संकुचन

(1)

मुद्रास्फीति की विपरीत अवस्था को संकुचन या मुद्रा विस्फीति कहते हैं। यह भी मुद्रा स्फीति के समान एक आर्थिक रोग है। मुद्रासंकुचन ~~को~~ मुद्रा की माँग एवं पूर्ति से संबंधित है। मुद्रा संकुचन भी मूल रूप से सरकारी नीति के कारण ही होता है। जब देश का भुगतान संतुलन निरन्तर पक्ष में हो और विदेशों से स्वर्ण अथवा पूँजी का निरन्तर आयात होने पर भी न तो मुद्रा की मात्रा में वृद्धि हो और न ~~ही~~ वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होने ~~दी~~ जाय तो मुद्रा विस्फीति की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। कभी-कभी - वस्तुओं का उत्पादन बढ़ता रहता है लेकिन माँग में शिथिलता रहती है तो भी मुद्रा संकुचन की स्थिति बन जाती है।

विद्वान क्राउथर साहेब ने कहा है कि - "मुद्रा संकुचन वह स्थिति है जिसमें मुद्रा का मूल्य बढ़ता जाता है और वस्तुओं का मूल्य घटता जाता है।

प्रो० पीगू के अनुसार - "मुद्रासंकुचन कीमत स्तर की गिरने की वह अवस्था है जो उस समय उत्पन्न होता है जबकि वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन मौद्रिक आय की तुलना में तेजी से बढ़ता है।"

मुद्रा विस्फीति के प्रभाव (Effects of deflation)

(1) सामान्य जनता को लाभ - मुद्रासंकुचन के कारण मूल्यों में गिरावट आती है जिससे सामान्य जनता को लाभ होता है। क्योंकि वस्तुएँ सस्ती हो जाती हैं।

(2) उत्पादक तथा व्यापारी वर्ग - मुद्रा संकुचन से व्यापारी तथा ~~अर्थात वर्ग~~ उत्पादकों ~~को~~ को हानि होती है। इसके कारण उत्पादकों के उत्पादन लागत बढ़ जाता है। ~~पहले~~ कीमत गिरने से माल बिकना कठिन हो जाता है क्योंकि वस्तु की लागत अधिक होने से माल स्टॉक में अधिक हो जाता है।

(3) **विनियोग वर्ग** - मुद्रा संकुचन के परिणामस्वरूप विभिन्न प्रकार के अंश एवं प्रतिभूतियों के मूल्य गिरने लगते हैं जिससे व्यवसाय में धन लगाने वाले व्यक्तियों को बहुत हानि होती है।

(4) **बैंक व्यवस्था के क्षेत्र में** - मुद्रा संकुचन के समय में उद्योग तथा व्यापार के क्षेत्र में मंदी आने के कारण नये ऋण की माँग कम हो जाती है और पुराने ऋण भी वसूल नहीं हो पाते हैं।

(5) **श्रमिक वर्ग** - मुद्रा संकुचन की प्रारम्भिक स्थिति में मूल्य गिरने से मजदूरों को लाभ होता है लेकिन कुछ दिन के बाद उद्योगपति मजदूरी घटाने लगते हैं। मजदूरों की छँटनी होने लगती है। जिससे श्रमिकों की आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है।

(6) **कृषकों की हानि** - कृषि पदार्थों के मूल्य गिरने के कारण किसानों को उत्पादन का मूल्य कम मिलता है जिसके कारण खेती सम्बन्धी और निजी खर्च चलाने के लिए उधार लेना पड़ता है।

(7) **विदेशी व्यापार की समाप्ति** - मुद्रा संकुचन से प्रारम्भ में देश की वस्तुओं की माँग विदेशों में रहती है लेकिन बाद में मन्दी का प्रभाव विश्व में फैल जाता है। जिससे व्यापार में मंदी आ जाती है। और विदेशी व्यापार समाप्त हो जाता है।

मुद्रास्फीति अन्यायपूर्ण है तथा मुद्रा विस्फीति (संकुचन) अनुपयुक्त तथा दोनों में अन्तर – (Inflation is unjust, deflation is inexpendient) (3)

मुद्रास्फीति एवं विस्फीति के गुण-दोषों पर विचार करने के बाद यह जानना आवश्यक है कि दोनों में कौन सी स्थिति अच्छी है या ~~बुरी है~~ खराब है। दोनों ही स्थिति किसी भी स्वस्थ अर्थव्यवस्था के आर्थिक रोग हैं। ऐसी स्थिति में दोनों को श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता फिर भी तुलनात्मक अध्ययन के बाद स्फीति उत्पादन को बढ़ावा देता है और विस्फीति आय के वितरण को बढ़ावा देता है।

प्रो० कीन्स साहब का कहना है कि "मुद्रास्फीति अन्यायपूर्ण है और मुद्रासंकुचन अनुपयुक्त इन दोनों में मुद्रा संकुचन अधिक खराब है।"

मुद्रास्फीति का अन्यायपूर्ण होना –

(1) मुद्रास्फीति के समय में वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होती है जिससे समाज के गरीब वर्ग पर आर्थिक बोझ बढ़ जाता है।

Scanned with CamScanner

अमीर वर्ग तो इस बोझ को सहन कर लेता है लेकिन गरीब वर्ग सहन नहीं कर पाता है। (4)

(2) मुद्रास्फीति में वेतन भोगी तथा निश्चित आय वाले लोगों की आय तो पूर्ववत रह जाती है लेकिन वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य में वृद्धि होने जाने से उपभोग में कटौती करनी पड़ती है।

(3) जब सरकार बजट सम्बन्धी घाटे की पूर्ति के लिए नयी मुद्रा का निर्गमन करती है तब यह नीति एक प्रकार से अप्रत्यक्ष कराधान होती है क्योंकि वस्तुओं की कीमत बढ़ जाती है।

(4) मुद्रास्फीति के समय में ऋणदाता को भी हानि होती है उन्होंने जिस समय ऋण उधार दी थी उस समय मुद्रा की जो क्रयशक्ति थी वह अब नहीं दे पाती।

(5) मुद्रास्फीति के कारण अमीर और अधिक अमीर हो जाते हैं तथा गरीब वर्ग और अधिक गरीब हो जाते हैं। इससे विषमता की स्थिति उत्पन्न होने लगती है।

अतः यह कह सकते हैं कि मुद्रास्फीति अन्यायपूर्ण है।

<u>मुद्रासंकुचन का अनुपयुक्त होना</u>

(1) <u>उत्पादन में कमी</u> - मुद्रासंकुचन के समय में वस्तुओं की कीमतों में कमी आ जाती है ~~जिससे वस्तुएं सस्ती हो जाती हैं~~ उत्पादकों को हानि होती है उद्योगपति उत्पादन कम कर देते हैं जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाती है।

5

(2) बेरोजगारी - मुद्रासंकुचन के समय में उद्योग बन्द हो जाते हैं जिससे बेरोजगारी बढ़ने लगती है।

(3) विरोधाभास - मुद्रा संकुचन समय में अर्थव्यवस्था में विरोधाभास दिखाई देता है वस्तुएं सस्ती हो जाती हैं लेकिन जनता के पास क्रय शक्ति की कमी रहती है। जिससे वे अनिवार्य आवश्यकताएं भी पूरी नहीं कर पाते।

(4) अत्यधिक नैतिक पतन - मुद्रासंकुचन के समय जनता का अधिक नैतिक पतन होता है क्योंकि आय में कमी और बेरोजगारी में वृद्धि नैतिक पतन को बढ़ावा देता है।

(5) समृद्धि में कठिनाई - मुद्रासंकुचन का दौर एक बार यदि उत्पन्न हो जाता है तो उसे रोकना और पुनः समृद्धि की ओर जाना कठिन हो जाता है।,

मुद्रासंकुचन अधिक खराब है, बुरा एवं कष्टदायक है —

उपर्युक्त बातों से स्पष्ट हो जाता है कि अर्थव्यवस्था के लिए मुद्रा स्फीति और मुद्रासंकुचन दोनों खराब हैं। अब देखना है कि दोनों में कौन सा अधिक खराब है।

मुद्रास्फीति में आर्थिक विकास के लिए सामान्यतः लाभकारी होती है उससे उत्पादन को प्रोत्साहन मिलता है तथा अधिक लोगों को रोजगार मिलने लगता है।

क्योंकि मुद्रा संकुचन के समय में वस्तुओं का मूल्य गिरने लगता है उत्पादन कम होने लगता है। व्यापार बन्द होने लगता है जिससे बेरोजगारी बढ़ जाता है। सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था चरमरा जाता है।

अन्त में हम कह सकते हैं कि जहाँ मुद्रा स्फीति के कारण उत्पादन, उद्योग, कृषि, विनियोजन, बैंकिंग व्यवस्था तथा श्रमिक वर्ग को लाभ होता है। जिससे देश की आर्थिक व्यवस्था ठीक होने लगता है। मुद्रा संकुचन के समय में व्यवसाय, उद्योग एवं बैंकिंग व्यवसाय एवं विदेशी व्यापार में मन्दी आ जाती है। जिससे अत्यधिक लोग बेरोजगार हो जाते हैं। जिससे देश की आर्थिक स्थिति खराब हो जाता है। इसलिए प्रो० केन्स साहब ने कहा है कि "मुद्रा स्फीति अन्यायपूर्ण है और मुद्रा संकुचन अनुपयुक्त - इन दोनों में मुद्रा संकुचन अधिक बुरा (खराब) है।

मुद्रा संकुचन को रोकथाम के लिए निम्न उपाय किया जा सकता है :—

(A) मौद्रिक उपाय - (1) मुद्रा का निर्गमन (2) साख मुद्रा में वृद्धि

(B) राजकोषीय उपाय - (1) करों में कमी (2) सार्वजनिक व्यय में वृद्धि (3) आर्थिक विकास के कार्यक्रम चलाना (4) ऋणों का भुगतान

(C) अन्य उपाय - (1) निर्यात को प्रोत्साहन देना तथा आयातों को नियंत्रित करना (2) अतिरिक्त उत्पादन को नष्ट करना।

— X —